मीरा के कृष्ण

प्रश्न : आपने कहा कि गीता के कृष्ण से मीरा का कोई संबंध नहीं है। लेकिन मीरा तो कहती है कि मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई। तो यह गिरधर गोपाल कौन है? स्पष्ट करने की कृपा करें।

गिरधर गोपाल का गीता में कहीं भी उल्लेख है?

कृष्ण पूर्ण अवतार हैं। कृष्ण के बहुत रूप हैं। कृष्ण उतने रूपों में प्रगट हुए हैं जितने रूप हो सकते हैं। गीता का कृष्ण तो सिर्फ एक ही रूप है कृष्ण का। शंकराचार्य उस रूप के प्रेम में हैं, श्री अरविंद उस रूप के प्रेम में हैं, लोकमान्य तिलक उस रूप के प्रेम में हैं।

गीता पर हजारों टीकाएं लिखी गयी हैं। कृष्ण उसमें समाप्त नहीं हैं। वह कृष्ण की एक तरंग है। वह एक दृश्य है कृष्ण के जीवन का। उस दृश्य को पूरा कृष्ण मत समझ लेना, अन्यथा भूल हो जाती है। कृष्ण उससे बहुत ज्यादा हैं।

इसलिए तो मीरा कहती है : मेरे तो गिरधर गोपाल! यह गिरधर गोपाल कृष्ण का दूसरा रूप है, जिसने पर्वत को हाथ पर उठा लिया था। ये श्रीमद्‍भागवत के कृष्ण हैं। ये कृष्ण हैं, जिन्होंने मटकियों से माखन चुराया। ये कृष्ण हैं, जिन्होंने गोपियों की मटकियों पर कंकड़ मारकर मटकियां तोड़ीं। ये कृष्ण हैं, जिन्होंने रास रचाया यमुना के तट पर। ये कृष्ण हैं, जो नाचे; जिनके हाथ में बांसुरी है; जिनके सिर पर मोरमुकुट है; जो पीतांबर ओढ़े हुए हैं। ये कृष्ण की सौंदर्य-प्रतिमा, ये कृष्ण का शृंगार रूप! ये कृष्ण मनमोहन हैं!

तो तुम गलत मत समझ लेना। मैंने यह नहीं कहा कि मीरा किसी और कृष्ण के प्रेम में हैं। मैंने सिर्फ इतना कहा कि गीता के कृष्ण के प्रेम में मीरा नहीं है। नहीं तो गीता पर व्याख्या करती। कृष्ण

को मीरा ने ऐसे देखा जैसे राधा ने देखा होगा, जैसे और सखियों ने देखा होगा। युद्ध के मैदान पर खड़े कृष्ण नहीं—ब्रज की कुंज गलिन में रास रचाते, बंसी वट में बांसुरी बजाते, गायें चराते! कृष्ण का यह जो मनमोहक रूप है, कृष्ण का यह जो प्रीतम रूप है—मीरा इस रूप के प्रेम में है।

और ध्यान रखना : कृष्ण इतने विराट हैं कि तुम अपनी मनपसंद का कृष्ण चुन सकते हो। सूरदास ने कोई तीसरा ही कृष्ण चुना है। वह छोटा-सा बालक कृष्ण, पैर में गुनगुनियां बांधे, नंग-धड़ंग, यशोदा को परेशान कर रहा है। सूरदास ने बालक कृष्ण को चुना है। सूरदास के लिए बालकृष्ण काफी हैं। वह छोटे से कृष्ण की लीला, बाल-लीला! वह सूरदास को भा गयी है। सूरदास का प्रेम कृष्ण के प्रति वात्सल्य का प्रेम है। छोटे बच्चे के प्रति। छोटे बच्चे की लीलाएं, खेलों के प्रति। छोटे बच्चे के मचलने के प्रति। सूरदास वात्सल्य से कृष्ण को देखे।

मीरा का कृष्ण मीरा का पति है। मीरा का कृष्ण मीरा का प्यारा है, प्रीतम है। छोटे बच्चे की तरह मीरा ने कृष्ण को नहीं चुना है।... संगी-साथी की तरह, मित्र की तरह। जैसे कोई स्त्री पति को चुने, ऐसा मीरा ने कृष्ण को चुना है।

प्यारी कहानी है। छोटी थी मीरा। और घर में एक साधु ठहरा। उस साधु के पास कृष्ण की बड़ी प्यारी प्रतिमा थी। छोटी-सी प्रतिमा! सांवले सलोने कृष्ण की। मीरा छोटी थी, होगी तीन-चार साल की। सुबह साधु ने पूजा के लिए प्रतिमा निकाली, और मीरा मचल गयी। वह प्रतिमा चाहती थी। साधु देने को राजी नहीं था। साधु ने साफ इनकार भी कर दिया, मीरा की मां ने भी समझाया, पैसा भी ले लो। उसने कहा : 'ये मेरे भगवान हैं, इन्हें मैं बेच सकता हूं? यह मैं नहीं दे सकता। यह मुझे बड़ी प्यारी मूर्ति है। इसके बिना मैं नहीं रह सकता।'

साधु अपनी मूर्ति लेकर चला गया। दूसरे गांव में रात सोया और कथा है कि कृष्ण उसे प्रगट हुए निद्रा में और कहा कि तूने ठीक नहीं किया। जिसकी मूर्ति थी, उसे दे दे।

उसने कहा : मूर्ति मेरी है, उस लड़की की नहीं। कृष्ण ने कहा : उसी की है। तेरा संबंध मुझसे औपचारिक है, तुम और मूर्ति उठा लेना, उससे भी चलेगा। उसका संबंध मुझसे बहुत गहरा है। यह मूर्ति उसी की है, तू लौटकर उसको दे आ। इसी वक्त जा और दे आ। तूने ठीक नहीं किया।

और वहां मीरा थी कि दिनभर भूखी बैठी थी। उसने खाना नहीं लिया। उसने कहा : मूर्ति मिलेगी तो ही खाना लूंगी, नहीं तो अब मर जाऊंगी। मां परेशान है, घर के लोग परेशान हैं। अब यह भी कोई जिद्द है! क्योंकि दूसरे की चीज है, वह दे, न दे...। फिर ऐसी-वैसी चीज नहीं है, उसके आराध्य देव की प्रतिमा है; वह नहीं दे तो कुछ नाराजगी की बात नहीं है, बिलकुल स्वाभाविक है।

लेकिन दूसरे दिन सुबह होते-होते वह साधु भागा हुआ आया। उसने कहा : मुझे क्षमा करो! मीरा के पैरों में गिर पड़ा और कहा : 'सम्हालो अपने कृष्ण को, वे तुम्हारे हैं।' फिर तो मीरा चौबीस घंटे उस मूर्ति को अपनी छाती से लगाये घूमती रहती। फिर पड़ोस में एक विवाह हुआ किसी लड़की का। मीरा वहां गयी है अपने कृष्ण को लिए हुए। पांच साल की होगी। और मां से पूछने लगी है : 'इसका विवाह हो रहा है, मेरा विवाह कब होगा?' और मां ने ऐसे ही मजाक में कहा : 'तेरा विवाह तो हो गया न! ये कृष्ण कन्हैया से!' और उसने बात मान ली। उस क्षण के बाद उसने कृष्ण के अतिरिक्त किसी को पति-रूप में नहीं देखा। विवाह भी हुआ। लेकिन कृष्ण ही पति रहे। वह कृष्णमय हो गयी।

> *कृष्ण तो एक सागर हैं। उनके बहुत घाट हैं। तुम जो घाट से चाहो, उतर जाओ। गीता एक घाट है। फिर कृष्ण का बालपन दूसरा घाट है। फिर कृष्ण की युवावस्था तीसरा घाट है। बहुत घाट हैं। कृष्ण के साथ बड़ी स्वतंत्रता है।*

मीरा का कृष्ण गीता का कृष्ण नहीं है। ऐसा मेरा कहने का मतलब सिर्फ इतना था : मीरा को कृष्ण के फलसफे में, उनके दर्शनशास्त्र में कोई रस नहीं है। गीता दर्शनशास्त्र है। वह कृष्ण का दार्शनिक वक्तव्य है। मीरा को कृष्ण की आंखों में रस है, उनके शब्दों में नहीं। मीरा को कृष्ण के रूप में रस है, उनके सिद्धांतों में नहीं। मीरा को कृष्ण में रस है; क्या कहते हैं, इसमें नहीं।

अभी चार दिन पहले यह घटना घटी। एक यहूदी मित्र, मनोवैज्ञानिक हैं, सुशिक्षित हैं, संपन्न हैं; सत्य की खोज में अमरीका से यहां चले आए। संयोग की बात थी कि जब वे यहां पहुंचे तो मैं जीसस पर बोल रहा था। यहूदी हैं तो उनका बड़ा कष्ट हुआ। संन्यस्त होना चाहते थे, लेकिन एक बात ने अड़चन डाल दी। क्योंकि मैंने जीसस पर बोलते हुए कहा कि 'जीसस से बड़ा यहूदी दुनिया में दूसरा नहीं हुआ। जीसस यहूदी जाति के सब से ऊंचे शिखर थे, गौरीशंकर थे।' यह बात उनका चोट कर गयी। यहूदी का मन यह मानने को नहीं होता कि—जीसस और सब से बड़े यहूदी! यहूदी तो मानता है कि जीसस भ्रष्ट व्यक्ति हैं, तभी तो सूली दी, निष्कासन किया। धोखेबाज हैं, पाखंडी हैं, असली मसीहा नहीं हैं। असली मसीहा तो अभी आने को है। औ इस आदमी ने जबरदस्ती शोरगुल मचा दिया कि मैं मसीहा हूं।

वे संन्यास लेने आए थे, मगर यह एक वक्तव्य उन्हें अड़चन में डाल गया। अब वे बड़ी दुविधा में पड़ गये कि क्या करूं, क्या न करूं। मुझसे पूछते थे कि और सब तो ठीक है, लेकिन आपके इस वक्तव्य से राजी नहीं हो पाता हूं। बहुत सुनता हूं, आपके सब टेप सुन रहा हूं, बार-बार पढ़ता हूं, बार-बार सुनता हूं, सब तरह की कोशिश करता हूं कि किसी तरह राजी हो जाऊं, लेकिन यह एक वक्तव्य मुझे अटकाये हुए है! जीसस—और सब से बड़े यहूदी! यह मैं नहीं मान सकता हूं।

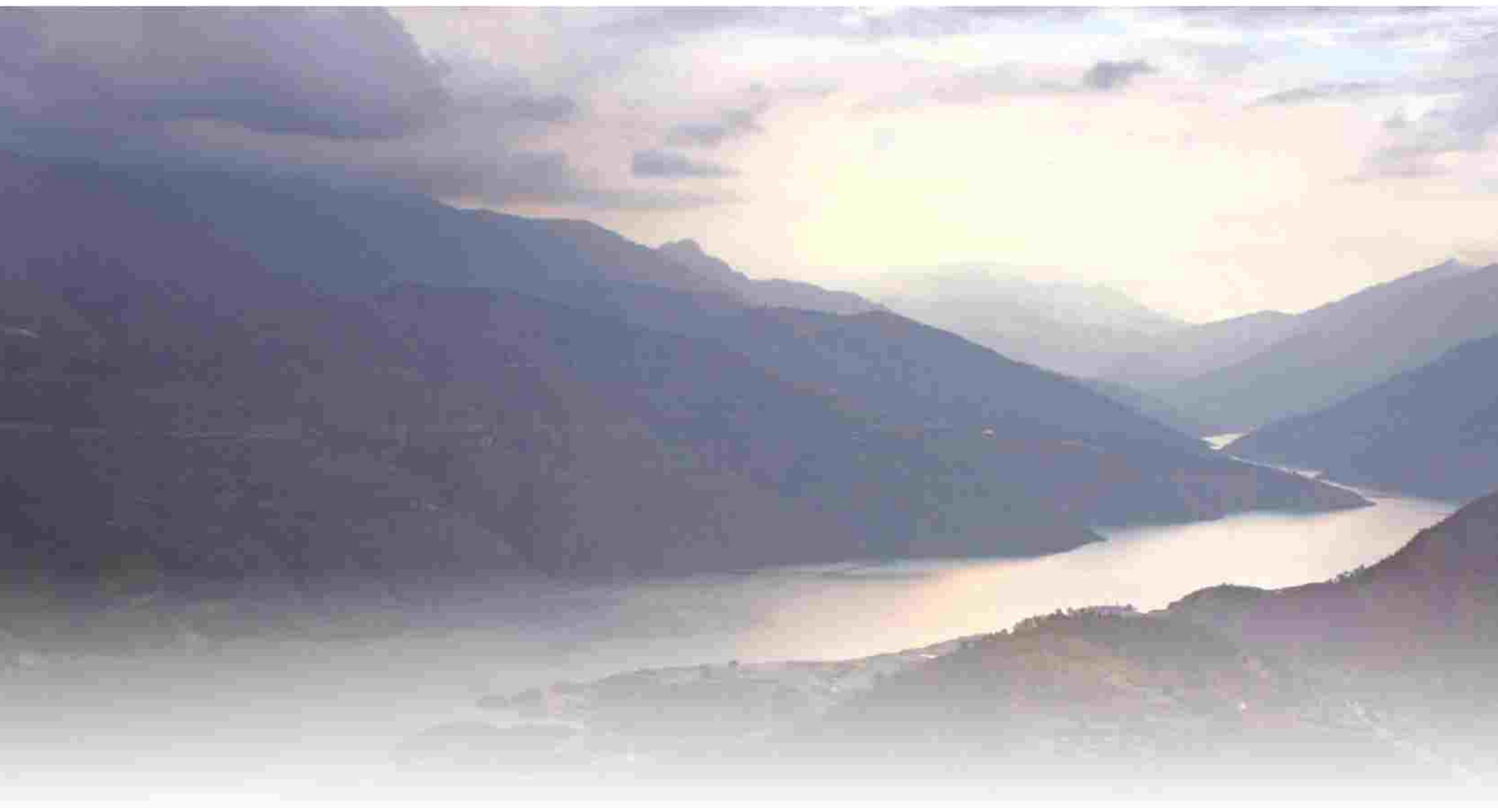

तो मैंने उनसे कहा : 'मेरे वक्तव्यों को मानने की जरूरत ही क्या है? मुझे मान सकते हो सीधा-सीधा? मैंने क्या कहा, छोड़ो फिकर! मैं क्या हूं, इसकी फिकर लो।' और जैसे बादल छंट गये और मैं देख सका सामने : उनकी आंखों में जो उलझन थी, वह विदा हो गयी। जैसे सूरज निकल आया आकाश में!

मीरा को, कृष्ण ने क्या कहा है, इसमें उत्सुकता ही नहीं है। कृष्ण की दर्शन-प्रणाली, कृष्ण का सिद्धांत-शास्त्र, कृष्ण के वक्तव्य—मीरा के लिए गौण हैं। विचार के विषय नहीं हैं। कृष्ण सीधे-सीधे हैं।

अगर कृष्ण ने गीता न कही होती तो शंकराचार्य को उनमें कोई रस न होता। अगर कृष्ण ने गीता न कही होती तो लोकमान्य तिलक ने उन पर कोई किताब न लिखी होती। मीरा फिर भी उनके गीत गाती। मीरा फिर भी गुनगुनाती।

मीरा का रस कृष्ण के व्यक्तित्व में है। सीधा-सीधा है। कृष्ण क्या कहते हैं, कहने दो जो कहते हों। कृष्ण क्या हैं, इसमें मीरा का रस है। इसलिए मैंने कहा कि गीता के कृष्ण से कोई संबंध नहीं है मीरा का।

तुम पूछते हो : 'आप ने कहा कि गीता के कृष्ण से मीरा का कोई संबंध नहीं।' तुम मेरी बात समझे नहीं। 'लेकिन मीरा तो कहती है कि मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोई।' मुझे भी मालूम है कि मीरा ऐसा कहती है। मगर ख्याल रखना, गिरधर गोपाल की कोई चर्चा ही गीता में नहीं है। यह गिरधर गोपाल, कृष्ण का बड़ा दूसरा आयाम है। कृष्ण बहु-आयामी हैं। महावीर एक-आयामी हैं। उसमें चुनाव ज्यादा करने की सुविधा नहीं है। महावीर में क्या चुनाव करोगे? बहुत चुनाव की सुविधा नहीं है। जैनों के दो संप्रदाय हैं : श्वेतांबर और दिगंबर। विपरीत हैं एक-दूसरे से, भिन्न हैं एक-दूसरे से; लेकिन फिर भी कितना फर्क करोगे महावीर में? ज्यादा फर्क नहीं कर पाते, थोड़ा ही सा फर्क कर पाते हैं। बड़ा क्षुद्र! दिगंबर की मूर्ति में आंख बंद होती है, श्वेतांबर की मूर्ति में आंख खुली होती है। बस! और फर्क ज्यादा करोगे भी क्या? और कुछ है भी नहीं वहां, नंग-धड़ंग खड़े हैं। आंख ही बची थी; उसको चाहो खोल लो, चाहे बंद कर लो। यह भी कोई फर्क है? मगर लड़ना हो तो यह भी काफी है। खोजा होगा उन्होंने बहुत, सब तरफ से निरीक्षण किया होगा। आगे-पीछे गये होंगे। देखा कि इस आदमी की आंख भर हिलती, बंद होती है। बस यही इसके दो ढंग हैं—कभी आंख खोलकर खड़ा होता है, कभी आंख बंद कर लेता है। इतना ही फर्क मिला दिगंबर और श्वेतांबर को। इतना-सा झगड़ा है। झगड़े जैसा झगड़ा भी नहीं। क्षुद्र, दो कौड़ी का है।

महावीर एक-आयामी हैं। ऐसे ही बुद्ध भी एक-आयामी हैं। कृष्ण बहु-आयामी हैं। खूब चुनाव की सुविधा है। इसलिए ऐसा भी हो सकता है कि सूरदास को सुना तो तुम्हें समझ में न आए कि किस कृष्ण की बात कर रहे हैं। और मीरा को सुना तो वह कुछ दूसरे ही कृष्ण की बात कर रही है। और शंकराचार्य को सुनो तो वे किसी तीसरे ही कृष्ण की बात कर रहे हैं। मगर वे एक ही कृष्ण की बात कर रहे हैं। लेकिन सबने अपने अंग चुन लिए हैं, जो जिसको रुचिकर लगा है। कृष्ण तो एक सागर हैं। उनके बहुत घाट हैं। तुम जो घाट से चाहो, उतर जाओ। गीता एक घाट है। फिर कृष्ण का बालपन दूसरा घाट है। फिर कृष्ण की युवावस्था तीसरा घाट है। बहुत घाट हैं। कृष्ण के साथ बड़ी स्वतंत्रता है। तुम्हारा जैसा भाव हो, कृष्ण की तुम मूर्ति वैसी ही गढ़ ले सकते हो। कृष्ण को तुम अपने ढंग से प्यार कर सकते हो, तुम्हें स्वतंत्रता है।

– ओशो

पद घुंघरू बांध

चौदहवां प्रवचन, तीसरा प्रश्न